पतित पावन सीताराम

रघुपति राघव राजाराम

* श्रीसीतापतये नमः *

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत

रामायण आठौ काण्ड

मञ्जु भाषिणी भाषा टीका सहित

टीकाकार—

अनेक पौराणिक तथा साहित्यिक ग्रन्थों के

सफल अनुवादक

श्री मन्नालाल अभिमन्यु, एम० ए०

पं० ज्वालाप्रसाद द्वारा

संशोधित

बम्बई

अक्षरों में

प्रकाशक—

पं० छन्नूलाल ज्ञानचन्द पाठक

संस्कृत पुस्तकालय

कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

मूल्य १८)

पतित पावन सीताराम

रघुपति राघव राजाराम

श्री नरहरि स्वामीजी ने वैष्णवों के संस्कार करके राममन्त्र की दीक्षा दी। दस महीने तक अयोध्या में हनुमान टीले पर रह कर उन्होंने बालक को विद्याध्ययन कराया। हेमन्त ऋतु आने पर गुरु-शिष्य दोनों ने अवध से यात्रा की और गोंडा जिले में सरयू तथा घाघरा के संगम पर स्थित शूकरक्षेत्र में आये और वहाँ पाँच वर्षों तक उन्होंने रामचरित का उपदेश दिया। इसका उल्लेख गोस्वामीजी यों करते हैं—

मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत। समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत॥

वहाँ से घूमते-फिरते काशी आये और पञ्चगङ्गाघाट पर ठहरे। वहाँ शेष सनातनजी ने गोस्वामी जी को पन्द्रह वर्षों तक वेद-वेदाङ्गों का अध्ययन कराया। फिर अपनी जन्मभूमि का दर्शन करने के अभिप्राय से राजापुर गये। उन्हें अपनी जन्मभूमि से कितना प्रगाढ प्रेम था—यह तापस प्रसङ्ग से स्पष्ट है। जब रामजी प्रयाग से चित्रकूट जाते हुए यमुना पार करते हैं और भरद्वाजमुनि के द्वारा साथ लगाए हुए शिष्यों को विदा करते हैं, तब राजापुर के पास अपने प्रभु को देखकर, गोस्वामीजी तुरंत ही ध्यानावस्थित हो वहाँ पहुँच जाते हैं। यथा—'तेहि अवसर एक तापस आवा'''आदि (२०४)

संवत् १५८३ ज्येष्ठ शुक्ल १३ गुरुवार को उनका विवाह भारद्वाज गोत्र की एक सुन्दरी कन्या के साथ हुआ। वे उस पर इतने मुग्ध थे कि उसे अपने मायके नहीं जाने देते थे। एक दिन वह इनकी अनुपस्थिति में अपने भाई के साथ चली गयी तो ये भी नदी पार कर आधीरात के समय ससुराल पहुँचे। इस पर उनकी पत्नी ने भर्त्सना की कि—'अस्थि चर्म की देह मम, तापर जितनी प्रीति। तिसु आधी जो राम प्रति अवसि मिटिहि भवभीति॥' तुलसीदासजी को ये शब्द वज्रवत् लगे और उन्होंने भगवान् की आराधना का सङ्कल्प कर लिया। वहाँ से चलकर वे प्रयाग आये। वहाँ साधु-वेश स्वीकार करके, गृहस्थ वेष का परित्याग कर दिया। फिर चौदह वर्ष, दस महीने सत्तरह दिन तक तीर्थयात्रा करते हुए काशी आये। काशीजी में वे प्रतिदिन रामकथा कहते थे। एक दिन शौच जाते समय उन्हें एक प्रेत मिला, जिसने हनुमानजी का पता बतलाया। श्रीहनुमान्‌जी से मिलने पर, तुलसीदासजी ने रामजी का दर्शन कराने का अनुनय-विनय किया। हनुमानजी ने कहा—तुम्हें चित्रकूट में भगवान् के दर्शन होंगे। तब चित्रकूट में पहुँचकर, रामघाट पर उन्होंने अपना आसन जमाया। एक दिन प्रदक्षिणा के लिए जाते समय मार्ग में भगवान् के दर्शन हुए। पर वे पहचान न सके। पीछे से हनुमान जी ने आकर सब भेद बताया तो वे बड़े दुःखित हुए। इस पर हनुमान्‌जी ने कहा कि प्रातःकाल पुनः भगवान् के दर्शन होंगे। सवत् १६०७ की मौनी अमावस्या बुधवार के दिन उनके सामने भगवान् पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बालरूप में तुलसीदासजी से चन्दन माँगा। हनुमानजी ने विचार किया कि आज भी धोखा न खा जाँय, इसलिए तोते का रूप धारण कर यह दोहा पढ़ा—'चित्रकूट के घाट पर भइ संतन की भीर। तुलसिदास चंदन घिसें तिलक देत रघुबीर।' तुलसीदासजी भगवान् की छबिसुधा का अ-पलक नेत्रों से पान करने लगे। उन्हें अपनी देह की सुध-बुध जाती रही। भगवान् ने अपने हाथ से चन्दन लेकर, अपने एवं तुलसीदासजी के ललाट में तिलक किया और फिर वे अन्तर्धान हो गये।

संवत् १६३१ चैत्र शुक्ल राम नवमी के दिन तुलसीदासजी ने राम-चरितमानस की रचना प्रारम्भ की और दो वर्ष, सात महीने, और छब्बीस दिनों में संवत् १६३३ मार्गशीर्ष मास में श्रीराम विवाह के दिन भव-सागर से पार उतरने के लिए सात सोपान बना कर तैयार कर दिये।

गोस्वामीजी के बनाये हुए १२ ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं—(१) रामचरितमानस (रामायण), (२) दोहावली, (३) कवित्तरामायण, (४) गीतावली (५) रामाज्ञा (६) विनयपत्रिका (इस विनय पत्रिका का अक्षरशः संस्कृत अनुवाद म० म० स्व० सुधाकर द्विवेदीजी ने किया था। उनकी हस्तलिखित प्रति मेरे पास सुरक्षित है) (७) रामलला नहछू (८) वैराग्यसन्दीपिनी (९) बरवै रामायण (१०) पार्वती मङ्गल (११) जानकी मङ्गल (१२) कृष्ण गीतावली।

कहते हैं कि तुलसीदासजी का अन्तिम दोहा यह है—

राम नाम जस बरनि कै भयउ चहत अब मौन। तुलसी के मुख दीजिए अब ही तुलसी सोन॥

संवत् १६८० श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवार को, गङ्गा के तट पर, अस्सीघाट पर, गोस्वामीजी 'राम राम' कहते हुए साकेतवासी हुए। श्रीवेणीमाधवजी ने लिखा है कि—

संवत सोरह सै असी, असी गंग कै तीर। सावन स्यामा तीज को, तुलसी तज्यो सरीर॥

❀ विषयानुक्रमणिका ❀

विषय	पृष्ठ-संख्या
[१. बालकाण्ड]	
मङ्गलाचरण	१
गुरु-वन्दना	३
ब्राह्मण, संत, खल-वन्दना ...	४
तुलसीदासजी की दीनता और रामभक्तिमयी कविता की महिमा ...	१३
कवि-वन्दना	२०
शिव, पार्वती वन्दना	२१
रामनाम वन्दना और रामनाम महिमा	२६
श्रीरामगुण और श्रीरामचरित की महिमा	३४
रामायण की तिथि	४१
मानस का रूपक और माहात्म्य ...	४२
याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद ...	५०
अगस्त्य संवाद	५३
सती का भ्रम, रामजी का परीक्षा लेना	५५
शिवजीद्वारा सती का त्याग, शिवजी की समाधि	६०
सती का दक्ष यज्ञ में जाना ...	६४
सती का शरीर त्याग और दक्ष-यज्ञ विध्वंस	६६
पार्वती का जन्म और तपस्या ...	६७
रामजी का शिवजी से विवाह के लिए अनुरोध	७५
सप्तर्षियों द्वारा पार्वतीजी की परीक्षा	७६
कामदेव का शिवजी के पास जाना और भस्म होना	८१
शिवजी की बारात और विवाह की तैयारी	८८
शिवजी का विवाह	९७
शिव-पार्वती-संवाद	१०३
भगवान् के अवतार लेने का कारण	११४
नारद का अभिमान और माया का प्रभाव	१२०
नारद का भगवान् को शाप देना और नारद का मोह-भङ्ग	१२६
मनु-शतरूपा-तप एवं वरदान ...	१३०
भानुप्रताप की कथा	१३९
रावण कुम्भकर्ण आदि का जन्म, तपस्या और उनका ऐश्वर्य तथा अत्याचार	१५६
पृथ्वी और देवताओं की करुण पुकार...	१६४
भगवान का वरदान	१६६
राजा दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ, रानियों का गर्भवती होना	१६८

विषय	पृष्ठ-संख्या
भगवान् का प्रकट होना और बाललीला वर्णन	१७०
विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण को माँगना	१८३
विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा	१८६
अहल्या उद्धार	१८७
राम-लक्ष्मण सहित मुनि का जनकपुर पहुँचना	१८८
श्रीराम-लक्ष्मण का जनकपुर देखना	१९४
पुष्पवाटिका में सीता दर्शन ...	२००
श्रीसीताजी का पार्वती-पूजन एवं वरदानप्राप्ति	२०७
श्रीरामजी का मुनि के साथ धनुषयज्ञ में जाना	२११
राजाओं से धनुष न उठना, जनक की निराशा जनक वाणी ...	२२०
श्रीलक्ष्मण का क्रोध	२२१
धनुषभङ्ग	२२८
सीताजी का जयमाल पहनाना ...	२३१
श्रीराम-लक्ष्मण और परशुराम संवाद	२३५
दशरथजीके पास जनकजीका दूत भेजना अयोध्या से बारात का प्रस्थान	२५७
बारात लेकर जनकपुर में आना ...	२६२
श्रीसीता-राम विवाह	२७९
बारात बिदाई और अयोध्या में आनन्द	३००
श्रीरामचरित्र सुनने-गाने की महिमा	३१४
[२. अयोध्याकाण्ड]	
मङ्गलाचरण	३१५
रामराज्याभिषेक की तैयारी ...	३१८
सरस्वती का मन्थरा की बुद्धि फेरना कैकेयी-मन्थरा-संवाद ...	३२५
कैकेयी का कोपभवन में जाना ...	३३३
दशरथ-कैकेयी-संवाद ...	३३५
कैकेयी का दो वरदान माँगना ...	३३८
दशरथ विषाद और कैकेयी को समझाना	३४०
श्रीराम-कैकेयी-संवाद ...	३४६
श्रीराम-दशरथ-संवाद ...	३५०
श्रीराम-कौसल्या-संवाद ...	३५६
श्रीसीता-राम-संवाद ...	३६३
श्रीराम-कौसल्या-सीता-संवाद ...	३६८
श्रीराम-लक्ष्मण-संवाद ...	३७०

श्रीलक्ष्मण-सुमित्रा-संवाद ... ३७३
श्रीरामजी, लक्ष्मणजी, सीताजीका दशरथजीके पास विदा माँगने जाना ३७५
श्रीराम-सीता-लक्ष्मण का वनगमन ३७८
श्रीराम का शृंगवेरपुर पहुँचना, निषाद के द्वारा सेवा ३८३
लक्ष्मण-निषाद-संवाद, श्रीराम-सीता से सुमन्त्र का संवाद, सुमन्त्र का लौटना ३८६
केवट का प्रेम और गङ्गा-पार जाना ३९३
प्रयाग पहुँचना, भरद्वाज-संवाद ... ३९७
यमुना को प्रणाम, वनवासियों का प्रेम ४०३
श्रीराम-वाल्मीकि-संवाद ... ४१३
चित्रकूट में निवास ४१९
सुमन्त्र का अयोध्या आगमन ... ४२८
दशरथ-सुमन्त्र-संवाद, दशरथ-मरण ४३२
वशिष्ठजी का भरतजी को बुलाने के लिए दूत भेजना ४३८
श्रीभरत-शत्रुघ्न का आगमन और शोक ४३९
भरत-कौसल्या-संवाद और दशरथजी की अन्त्येष्टि-क्रिया करना ... ४४३
वशिष्ठ-भरत-संवाद, रामजी को लाने के लिए चित्रकूट जाने की तैयारी ४४९
अयोध्यावासियोंसहित श्रीभरत शत्रुघ्न का वनगमन ४६०
भरत गुह मिलन और संवाद ... ४६६
भरतजी का प्रयाग जाना और भरत भरद्वाजसंवाद ४७५
भरतजीका चित्रकूट के लिए प्रस्थान करना ४८९
श्रीरामजी को कोल-किरातों द्वारा भरतजी के आगमन की सूचना, रामजी का शोक, लक्ष्मणजीका क्रोध ४९३
श्रीरामजीका लक्ष्मणजीको समझाना और भरतजी की महिमा कहना ... ४९७
भरतजी का मन्दाकिनी-स्नान, चित्रकूट में पहुँचना, भरतादि सबका परस्पर मिलाप, पिता का शोक और श्राद्ध ४९९
श्रीराम-भरतादि का संवाद ... ५१७
जनकजी का पहुँचना, कोल-किरातादि की भेंट, सबका मिलाप ५३०
जनक-सुनयना-संवाद, भरतजीकी महिमा ५४३
श्रीराम भरत-संवाद ... ५५१
भरतजी का अयोध्या लौटना, पादुका स्थापन, नन्दिग्राम में निवास ... ५७१

[३. अरण्यकाण्ड]

मङ्गलाचरण ... ५७६
जयन्त की कुटिलता और फलप्राप्ति ५७७
अत्रि-मिलन और स्तुति ... ५७९
श्रीसीता-अनसूया-मिलन और श्रीसीताजी को अनसूयाजी का पातिव्रतधर्म कहना ५८१
विराध वध और शरभङ्ग मिलन ... ५८५
सुतीक्ष्णजी का प्रेम, अगस्त्य-मिलन, अगस्त्य संवाद, राम का दण्डक-वन-प्रवेश ५८७
पञ्चवटी निवास और श्रीराम लक्ष्मण संवाद ... ५९४
शूर्पणखा की कथा, शूर्पणखा का खरदूषण के पास जाना और खरदूषणादि का वध ५९७
शूर्पणखा का रावण के पास जाना ६०४
श्रीसीताजी का अग्निप्रवेश और माया-सीता ६०७
श्रीसीताहरण और श्रीसीताविलाप ६१२
जटायु-रावण युद्ध ... ६१३
श्रीरामजी का विलाप, जटायु का प्रसङ्ग ... ६१५
कबन्ध उद्धार ... ६१९
शबरी पर कृपा, नवधा-भक्ति-उपदेश और पम्पासर की ओर प्रस्थान ... ६२०
वसन्त ऋतु वर्णन ... ६२३
नारद-राम-संवाद ... ६२८
संतों के लक्षण ... ६३१

[४. किष्किन्धाकाण्ड]

मङ्गलाचरण ६३३
श्रीरामजी हनुमान्‌जी मिलन और श्रीराम-सुग्रीव की मित्रता ६३४
सुग्रीव का दुःख सुनाना, बालि वध की प्रतिज्ञा, श्रीरामजी का मित्र-लक्षण-वर्णन ६३७
सुग्रीव का वैराग्य ६४०
बालि-सुग्रीव युद्ध, बालि-उद्धार ... ६४२
तारा का विलाप, तारा को श्रीराम द्वारा उपदेश और सुग्रीव का राज्याभिषेक ६४४
वर्षा ऋतु-वर्णन ६४७
शरद्-ऋतु-वर्णन ६४९
श्रीराम की सुग्रीव पर अप्रसन्नता, लक्ष्मणजी का कोप ... ६५१
सुग्रीव-राम-संवाद और सीताजी की खोज के लिए बंदरों का प्रस्थान ... ६५३
ऋक्ष बिल में तपस्विनी के दर्शन ... ६५७

वानरों का समुद्रतट पर आना, सम्पाती से भेंट और बातचीत ६५८
समुद्र लाँघने का परामर्श, जाम्बवंत का हनुमान्‌जी को बल याद दिलाकर उत्साहित करना ६६२
श्रीराम-गुण का माहात्म्य ६६३

[५. सुन्दरकाण्ड]

मङ्गलाचरण ६६४
हनुमान्‌जी का लङ्का को प्रस्थान, सुरसा से भेंट, छाया पकड़नेवाली राक्षसी का वध ६६५
लङ्कावर्णन, लङ्किनी वध, लङ्का में प्रवेश ६६७
हनुमान् विभीषण संवाद ... ६७०
हनुमान्‌जी का अशोकवाटिका में सीता को देखकर दुखी होना ... ६७२
श्रीसीता-रावण संवाद ... ६७३
श्रीसीता त्रिजटा संवाद ६७५
श्रीसीता हनुमान्-संवाद ६७६
हनुमान्‌जी द्वारा अशोकवाटिका विध्वंस, अक्षयकुमार-वध और मेघनाद का हनुमान्‌जी को नागपाश में बाँधकर सभा में ले जाना ६८१
हनुमान्-रावण-संवाद ६८३
लङ्का-दहन ६८७
लङ्का जलानेके बाद हनुमान्‌जीका सीताजी से बिदा माँगना और चूड़ामणि पाना ६८८
मधुवनप्रवेश, सुग्रीव मिलन, श्रीराम हनुमान्-संवाद ६८९
श्रीरामजी का लङ्का के लिए प्रस्थान ... ६९५
मन्दोदरी-रावण-संवाद ... ६९६
रावण के युद्ध मन्त्रिमण्डल का वर्णन ६९७
विभीषण-रावण संवाद ... ६९८
विभीषण का रामजी की शरण में जाना ७०१
श्रीराम-विभीषण-संवाद ... ७०४
समुद्र पार करने के लिए विचार, रावण-दूत शुक्र का आना और लक्ष्मणजीके पत्र को लेकर लौटना ... ७०८
शुक-रावण-संवाद ७१०
समुद्र पर क्रोध और समुद्र की विनती ७१५
श्रीरामगुणगान की महिमा ... ७१७

[६. लङ्काकाण्ड]

मङ्गलाचरण ७१८
नल-नील द्वारा पुल बाँधना, श्रीरामजी द्वारा श्रीरामेश्वर की स्थापना, रामेश्वर माहात्म्य ७२०
श्रीरामजी का सेनासहित समुद्र पार उतरना, सुबेलगिरि पर निवास, रावणकी व्याकुलता ... ७२३
मन्दोदरी-रावण-संवाद ... ७२४
रावण-प्रहस्त-संवाद ७२६
सुबेल गिरि पर श्रीरामजी की झाँकी और चन्द्रोदय वर्णन ... ७२८
रावणका छत्र मुकुटभंग ... ७३०
मन्दोदरी-रावण-संवाद और श्रीराम की महिमा कहना ७३१
अङ्गदजीका लङ्का जाना ... ७३४
अङ्गद-रावण-संवाद ७३६
पुनः मन्दोदरी-रावण-संवाद ... ७५२
अङ्गद-राम-संवाद ७५४
राक्षसों से युद्ध आरम्भ ... ७५६
माल्यवान्-रावण-संवाद ... ७६३
लक्ष्मण-मेघनादयुद्ध, लक्ष्मणजी को शक्ति ७६५
सुषेण वैद्य को लाना एवं हनुमान्‌जी का सञ्जीवनी बूटी के लिए जाना ... ७७०
भरत-हनुमान्-संवाद ... ७७३
श्रीरामजीका विलाप करना, श्रीलक्ष्मणजी की मूर्च्छा भङ्ग ७७४
रावण-कुम्भकर्ण-संवाद ... ७७५
विभीषण-कुम्भकर्ण-संवाद ... ७७६
कुम्भकर्ण-युद्ध, उसका बध ... ७७८
मेघनाद का युद्ध, नाग-पाश-बंधन ७८५
मेघनाद-यज्ञ-विध्वंस, युद्ध और मेघनाद वध ७८८
सुलोचना कथा (क्षेपक) ... ७९१
अहिरावण की कथा (क्षेपक) ... ८०९
रावण का युद्ध के लिए प्रस्थान और श्रीरामजी का विजय रथ तथा वानर राक्षसों का युद्ध ८२३
लक्ष्मण-रावण-युद्ध ८२७
रावण-मूर्च्छा, रावण यज्ञविध्वंस, राम-रावण-युद्ध ८३०
इन्द्र का श्रीरामजी के लिए रथ भेजना राम-रावण-युद्ध ८३४
रावण का विभीषणपर शक्ति छोड़ना, रामजी का शक्ति को अपने ऊपर लेना, विभीषण-रावण युद्ध ... ८४०

रावण हनुमान् युद्ध, रावण का माया रचना, रामजी द्वारा माया नाश ८४१
त्रिजटा-सीता-संवाद ... ८४६
राम-रावण-युद्ध, रावणबध, ... ८४८
मन्दोदरी-विलाप, रावण की अन्त्येष्टि ८५३
विभीषण का राज्याभिषेक ... ८५६
हनुमान्जी का सीताजी को कुशल सुनाना, सीताजी का आगमन और अग्निपरीक्षा ८५७
देवताओं की स्तुति ... ८६०
ब्रह्मस्तुति, इन्द्रस्तुति, इन्द्र की अमृतवर्षा ८६१
शिव-स्तुति ८६७
विभीषण का वानर भालुओं को सैनिक-सम्मान प्रदान करना ... ८६९
पुष्पक विमान पर श्रीरामजी का चढ़कर अवध के लिए प्रस्थान ... ८७१
श्रीरामचरित्र की महिमा ... ८७४

[७. उत्तरकाण्ड]

मङ्गलाचरण ८७५
भरत-विरह तथा भरत-हनुमान् मिलन ८७६
रामजी द्वारा जन्मभूमि की महिमा ८८०
भरत-मिलाप ८८१
राम-राज्याभिषेक, वेद-स्तुति, शिवस्तुति ८८७
वानरों की बिदाई ८९६
रामराज्य का वर्णन ८९९
सनक-सनन्दनादि का आगमन और संवाद ९०५
हनुमान्जी के द्वारा भरतजी का प्रश्न और श्रीरामजी का अद्वितीय उपदेश, संत-असंत लक्षण ... ९१३
श्रीरामजीका प्रजाको उपदेश (श्रीरामगीता) ९१८
श्रीराम-वसिष्ठ-संवाद, श्रीरामजी का भाइयोंसहित अमराई में जाना ९२२
नारद आगमन और स्तुति करके ब्रह्म-लोकको लौट जाना ... ९२५
शिव-पार्वती संवाद, गरुड़मोह, गरुड़जी का काकभुशुण्डि से राम-कथा, और राममहिमा सुनना ... ९२६
काकभुशुण्डि का अपनी पूर्वजन्मकथा और कलियुग माहात्म्य कहना ... ९४६
गुरुजी का अपमान एवं शिवजी के शाप की बात सुनना ९७४
रुद्राष्टक ९७७
ज्ञान-भक्ति निरूपण, ज्ञान-दीपक और भक्ति की महान् महिमा ... ९८९
गरुड़जी के सात प्रश्न तथा काकभुशुण्डि के उत्तर ९९८
भजन-महिमा १००१
रामायण-माहात्म्य, तुलसीविनय और रामायणस्तुति १००३

[८. लवकुशकाण्ड]

मङ्गलाचरण १०१२
भुशुण्डि-गरुड-संवाद ... ... ,,
श्रीरामजी का काशी आना ... १०१४
श्रीराम राज्य प्रशंसा १०१५
शूद्रक बध १०१७
धोबी द्वारा सीताजी के चरित्र में कलङ्क लगाना १०१९
सीता परित्याग १०२०
वाल्मीकि मुनि द्वारा सीता को सान्त्वना १०२५
श्रीरामजी का अश्वमेध यज्ञ करने का विचार १०२८
घोड़ा छोड़ा जाना १०३८
शत्रुघ्न-लवणासुर युद्ध १०४०
लवणासुर बध १०४८
लवकुश-शत्रुघ्न-संग्राम १०५०
लवकुश-लक्ष्मण-युद्ध १०५३
लवकुश-भरत-समर १०५६
लव-विभीषण संवाद १०६०
श्रीराम-वाल्मीकि मिलन ... १०६५
श्रीसीता पाताल प्रवेश १०६६
अश्वमेध यज्ञ की पूर्णाहुति ... १०६७
श्रीरामजी का परम धाम जाने का विचार एवं गमन १०७३
श्रीरामायणजी की आरती (आवरण पृष्ठ पर)

❀ राम कलेवा ❀

॥ छन्द ॥

भोर भए अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाए, सुनि पितुके संदेस लक्ष्मीनिधि सखन्ह सहित तहँ आए
सादर किए प्रनाम चरन छुइ लखि बोले मिथिलेसू, गवनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवध नरेसू
विनय सुनाइ राय दसरथ सों पाइ रजाय सचेतू, आनहु चारिहु राजकुमारहि करन कलेऊ हेतू
यह सुनि सीस नाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा, सखन्ह समेत मंद हँसि गवने चढ़ि-चढ़ि चपल तुरंगा
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे, मृदु मुसुकात बतात परसपर पहुँचि गए जनवासे
सखन्ह सहित तहँ उतरि तुरंग तें मिथिलापति के बारे, चारिहु सुत जुत अवधराज कहँ सादर जाइ जुहारे
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधि को लखि सखन्ह सहित सतकारे, रघुकुलदीप महीपहाथ गहि निजसमीप बैठारे
तेहि छिन सानुज निरखि रामछबि सखन्हसहित सुखमाने, लक्ष्मीनिधि मुख दरस पाइके रामहु नैन जुड़ाने
तब श्रीनिधि कर जोरि भूप सों कोमल बैन उचारे, करन कलेऊ हेतु पठावहु चारिहु राजदुलारे
सुनि मृदु बचन प्रेम रस साने दसरथ मृदु मुसुकाने, चारिहु कुँअर बुलाइ बेगि ही बिदा किए सुख माने
जनक नगर की जानि तयारी सेवक सब सुख पागे, निज निज प्रभुहि सँवारन लागे लै भूषन बर बागे
रघुनंदन सिर पाग जरकसी लसी त्रिभंगी बाँधी, तिमि नौरंगी झुकी कलंगी रचि रचि पेचनि साधी
कनक कलित अति ललित मनिन्हकी मंजुल मौर बिराजी, सिंधुर-मनि के सजे सेहरा जाहि होत मन राजी
ताके कोर कोर चहुँ ओरन लगी रहटकी पाँती, जगमग जोति होत चहुँदिसि ते लखि अँखिया न अघाती
कुंडल लोलैं हलै कपोलैं लगे अमोलैं मोती, जेबदार जगमगहि जराऊ जुगल जँजीरन जोती
जालिम जोरी जुलफैं जहरी जुबतिन जोबन हारी, छूटीं अलकैं दुहुँदिसि झलकैं मनहु मैन तरवारी
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आखैं, रसवारी बरबस बसरारी प्यारो आनन राखैं
अति अबरंगी रतिरस रंगी चढ़ी त्रिभंगी भौंहैं, मनहु मदन के जुग धनु सोहैं जिहि जोहैं सोइ मोहैं
तिलक रसाल बिसाल भालपर किमि बरनौं छबि ताकी, जनु नवघनपर रीझि दामिनी नेमु लियो थिरता को
अरुन अधरबिच दामिनि द्युतिवर दमकै दसनन पाँती, संमुखमुखकरिजेहिदिसिबोलैं अजब छटा छहराती
जगमगात अति स्याम गात पर जरतारिन को जामा, ताके कोर कोर चहुँओरन जड़े रतन मनि ग्रामा
पीत सफेदा सुछवि समेटा कमर लपेटा राजै, नवल पटूकौ करन लटूकौ काँधे पटुका भ्राजै
मनिमय कंकन सुखप्रद रंकन बंकन कर बिच बाँधे, जनु पुर जुवतिन मन जीतन को जन्त्र बसीकर साँधे

दो०–बरनि सकै को राम को, अनुपम दूलह भेष।
जेहि लखि सिव सनकादि को, रहत न तनहिं सरेष ॥ १ ॥

इमि सजि अनुज सहित रघुनंदन चारो राजदुलारे, बड़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन सँवारे
जे रघुबंसी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्रान पियारे, चढ़े तुरंग संग तेउ गवने राम रंग मतवारे
बोले चोबदार लै नामन बिरुदावली अलापैं, चंचल चवर चले दुहुँ दिसि तें छत्र सखा सिर ढापैं
राम बाम दिसि श्री लक्ष्मीनिधि सुखन सहित तेउ सोहैं, चंचल बागे किए तुरंग की बातैं करत हंसोहैं
जगबंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनंदन को बाजी, ताको गुन छबि कहँ लगि बरनौं जाहि होत मन राजी
भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन हय लखि लाजैं, चोटिन तनियाँ गुथौं सुमनियाँ पगु पैजनियाँ बाजैं
जड़ित जवाहर जीन जड़ी को जरबीली अति सोहै, पूजि पटा की छटा कहै को काम लटा मन मोहै
ललित लगाम दाम बहु केरी अंकित नाम बिराजै, सुछबि उमंगी झुकी त्रिभंगी मनिन कलंगी छाजै
जित रुख पावैं तित पहुँचावैं छिन आवै छिन जावै, जमि २ थमि २ थिरकि भूमिपर गति नीकी दरसावै
खोनी खट पोनी खुरथालै बँधी नवीनी नालैं, लेत उतालैं सिंह उछालैं करैं समुद्र इक फालैं
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व गवावै, रघुनंदन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला दिखावै
नाम समुद मुद देत जनन को तापर भरत बिराजैं, रघुनंदन के दहिने दिसि सों चलत चपलगति साजैं
रोकत बागैं अति रिस रागैं गरबित फुरकन लागैं, झमक झमाकी ले गति बाँकी दै झाँकी सुख पागैं
कहुँ नभ जावै सुरन झँकावै कहुँ मांह मोद मचावै, अवनी ते अरु आसमान लौं जनु सोपान बनावै
फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपलाहू चख झाँपै, भरत कुँवर को तुरंग रंगीलो बरनि जाय कहुँ का पै
चंपा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाए, सब समाज के आगे नृत्यत मोर कुरंग लजाए